स्वातंत्र्योत्तर मंचीय हिंदी नाटक

संपादक
डॉ. जयराम गाडेकर

भारतीय प्रकाशन गृह
दिल्ली

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-904851-3-5

प्रथम संस्करण : 2020

© डॉ. जयराम गाडेकर

प्रकाशक :

भारतीय प्रकाशन गृह

डी-579, गली नं.15, भजनपूरा
दिल्ली-110053

मुख्य वितरक :

आर.के. पब्लिकेशन

मरीन लाइंस, मुम्बई-400 002

Phone : 9022521190, 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com
Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : **राजेंद्र लाड**

E-mail : ladrajan2020@gmail.com

आवरण : **सुनील निम्बरे**

मूल्य : 395/-

Swatantryottar Mancheey Hindi Natak Edited By Dr. Jayram Gadekar

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

- हिंदी रंगमंच का विकास - डॉ. जयराम गाडेकर 13
- 'एक सत्य हरिश्चंद्र' की रंगमंचीयता - डॉ. नानासाहेब जावळे 84
- 'बाकी इतिहास' की रंगमंचीयता - डॉ. संतोष धोत्रे 91
- रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में 'कबिरा खड़ा बज़ार' में - डॉ. नवनाथ शिंदे 95
- 'इन्ना की आवाज' और रंगमंच - प्रा. प्रदीप जटाळ 103
- 'बिना दीवारों के घर' की रंगमंचीयता - डॉ. दीपक तुपे 108
- 'बर्फ की मीनार' की रंगमंचीयता - डॉ. शीतल दुर्गाडे 114
- 'आधे अधूरे' की रंगमंचीयता - डॉ. रवींद्र निरगुडे 120
- 'अभंग गाथा' नाटक का रंगशिल्प - डॉ. बाबासाहेब गव्हाणे 125
- 'आठवाँ सर्ग' की रंगमंचीयता - प्रा. सचिन जगताप 131
- 'वीमा' नाटक की रंगमंचीयता - प्रा. प्रशांत देशपांडे 135
- 'गाथा कुरूक्षेत्र की' रंगमंचीयता - प्रा. बाळासाहेब फुलमाळी 141
- 'आषाढ़ का एक दिन' की रंगमंचीयता - प्रा. नम्रता मोहिते 148
- 'वीरगति' नाटक की रंगमंचीयता - प्रा. संदीप काळे 155
- रंगमंचीयता की दृष्टि से 'गोदान' - संध्या 162
- 'द्रौपदी' नाटक की रंगमंचीयता - नानासाहेब चोरमले 169
- हिंदी महिला नाटककारों का रंगमंचीय योगदान - धनेश माने 176
- 'बकरी' नाटक की रंगमंचीयता- रूपाली प्रजापति 184
- 'आषाढ़ का एक दिन' आधुनिक भावबोध और अस्तित्ववादी दर्शन का रंगमंचीय निरूपण - अनुपम आनंद 191

Scanned by CamScanner

'बिना दीवारों के घर' की रंगमंचीयता

- डॉ. दीपक रामा तुपे

साठोत्तरी युग की शीर्षस्थ महिला रचनाकार मन्नू भंडारी नारी मुक्ति और नारीवाद की समर्थक रही हैं। पुरुषी मानसिकता, शोषणमूलक एवं अत्याचारी व्यवस्था, दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते संबंध और बच्चों की समस्या जैसे मानवीय प्रश्नों का लेखा-जोखा उनके साहित्य का केंद्रीय विषय रहा है। उन्होंने मानव जीवन के अनेक सवालों को उठाकर पाठक को सही दिशा में सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। प्रतिभासंपन्न एवं संवेदशील लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 ई. को मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ है। माता अनुकंवारी और पिता सुख संपतराय से उन्हें लेखन संस्कार विरासत में मिले थे। मूल महेंद्रकुमारी नाम की लेखिका साहित्य जगत् में मन्नू नाम से बहुचर्चित रही। सन् 1945 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और सन् 1949 में अजमेर कॉलेज से इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने कलकत्ते से बी. ए. और काशी विश्वविद्यालय से एम. ए. (हिंदी) किया। उन्होंने सन् 1952 से 1961 तक नौ साल बालीगंज शिक्षा सदन स्कूल, कोलकाता में अध्यापन कार्य किया। उसके बाद उन्होंने रानी बिड़ला कॉलेज में प्राध्यापिका के रूप में कई समय तक कार्य किया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाऊस कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। पति के साथ दिल्ली आई मन्नू अनबन के कारण पति से अलग हुई और वह अपनी बेटी रचना के साथ मुंबई में रही। 22 नवंबर, 1959 ई. में सुप्रसिद्ध रचनाकार राजेंद्र यादव के साथ अंतर्जातीय रजिस्टर मैरिज हुआ। उन्हें टींकू (रचना), स्नेह, बेटू तीन संतानें हैं। इन सारी बातों का जिक्र मन्नूजी ने अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में किया है। मन्नू अपनत्व का व्यवहार करने वाली, हँसमुख, प्रसन्न, साहसी, शिक्षित, जिम्मेदार, आत्मनिर्भर, देशप्रेमी, साहित्यकार, पढ़ने-पढ़ाने में रुचि रखने वाली, नारीवादी विचारक की पूरजोर हिमायत करने वाली लेखिका हैं। लेखिका मन्नू भंडारी आत्मकथाकार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं नाटककार के रूप में चर्चित है। उनके कहानी संग्रह हैं- 'मैं हार गई', 'तीन

Scanned by CamScanner

निगाहों की तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ', 'संपूर्ण कहानियाँ', 'नायक, खलनायक, विदूषक' आदि। उन्होंने 'एक इंच मुस्कान', 'आपका बंटी', 'स्वामी', 'महाभोज', 'कलवा', 'आसमाता' आदि उपन्यासों का सृजन किया है और 'बिना के दीवारों के घर', 'महाभोज' 'प्रतिशोध तथा अन्य एकांकी' का लेखन किया है। उनके साहित्य पर 'स्वामी', 'आपका बंटी' और 'सजा' आदि फिल्में बनी हुई है। वह गुलामी से नफरत, स्वाधीनता प्रेमी, संवेदनशील, मिलनसार, अध्ययनशील, साहसी, स्पष्ट विचारों की और अपने वसूलों के प्रति प्रतिबद्ध नारी के रूप में हमारे सामने आती है।

'बिना दीवारों के घर' मन्नू भंडारी का सन् 1966 ई. में प्रकाशित पारिवारिक समस्या प्रधान नाटक है। प्रस्तुत नाटक तीन अंकों का है, जो आठ दृश्यों में विभाजित है। प्रथम अंक में दो, द्वितीय और तृतीय अंक में तीन दृश्य हैं। नाटक स्त्री स्वातंत्र्य, नारी शिक्षा, कामकाजी नारी के प्रति पुरुषों की शंकाएं, ईर्ष्या की भावना को अभिव्यक्ति देता है। नाटक के कथा के केंद्र में शिक्षित पति-पत्नी (अजित और शोभा) के बीच उत्पन्न कुंठा, घुटन, मजबूरी और गलतफहमी है। अजित और शोभा पति-पत्नी दोनों मध्यमवर्गीय परिवार से है। अजित शादी के बाद अपनी पत्नी शोभा से आगे की पढ़ाई के लिए प्रेरणा एवं सहयोग देता है। उसकी प्रेरणा से शोभा एम. ए. की उपाधि हासिल करती है। यही शिक्षा उसमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाती है। वह अपनी शिक्षा का उपयोग आर्थिक स्वावलंबन के रूप में करना चाहती है, मगर पति उसे नौकरी करने से विरोध करता है। वह पति का विरोध अनदेखा कर जयंत की मदद से प्रिंसिपल का पद हासिल करती है। शोभा का जयंत के इशारों पर चलना, उसकी मदद से नौकरी में तरक्की पाना अजित को रास नहीं आता। उसके मन में पत्नी के प्रति संदेह और अविश्वास का भाव पैदा होता है। अजित शोभा पर जयंत और साहनी साहब के साथ नाजायज संबंध होने का आरोप लगाता है। उसके आरोप से घायल एवं क्रोधित शोभा पति और बच्ची को त्याग कर घर छोड़ने का निर्णय लेती है और अजित के दाम्पत्य रूपी घर की दीवारें टूट जाती हैं। मानो उनका 'बिना दीवारों का घर' शेष रहता है। बिना दीवारों के घर जो है उसकी दीवारें हैं, लेकिन लगभग 'न-हुई' सी है। एक स्त्री 'अपने' व्यक्तित्व की आँच में वे नहीं सँभाल पातीं और पुरुष जिसको परंपरा ने घर के रक्षक, घर का स्थपति नियुक्त किया है, वह उन पिघलती दीवारों के सामने पूरी तरह असहाय। यह समक्ष पाने में कतई अक्षम कि पत्नी की परिभाषा भूमिका से बाहर खिल और खुल रही उस स्त्री से क्या संबंध बने! कैसा व्यवहार किया जाए! और यह सारा असमंजस, सारी सुविधा और

Scanned by CamScanner

असुरक्षा एक निराधर संदेह के रूप में फूट पड़ती है। आत्मा और परपीड़न का एक अनंत दुश्चक्र जिसमें घर की दीवारें अंततः भहरा जाती हैं।" (www.pustak.org) स्पष्ट है कि शोभा स्वाभिमानी, आजादी, आत्मनिर्भर बनकर पति के दोहरे मानदंडों का विरोध कर स्वतंत्र रहना पसंद करती है। उच्च शिक्षित अजित नई पीढ़ी का प्रतिनिधि पात्र है। अपनी पत्नी शोभा को अपने अनुकूल एवं समकक्ष बनाने के लिए उसे उच्च शिक्षा प्रदान करता हैं लेकिन आधुनिक परिवेश में वह पत्नी की परंपरागत सीमाओं से जरा-सी भी ढील नहीं देता। पत्नी शोभा को अपने इशारों को जीने के लिए विवश कर देता है। वह सोचने-समझने के पुराने ढंग को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। उसे शोभा का जयंत के इशारों पर चलना और प्राचार्य पद का जिम्मा स्वीकारना बिलकुल पसंद नहीं है। इस बात को लेकर उसके मन में ईर्ष्या, शंका, गलतफहमी पैदा होती है। पति-पत्नी (अजित और शोभा) के बीच तीसरे आदमी यानी जयंत की उपस्थिति से उनके दाम्पत्य जीवन में तनाव-टकराहट निर्माण होने से उनका वैवाहिक जीवन तबाह हो जाता है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक मध्यवर्गीय वैवाहिक जीवन के मनोवैज्ञानिक पक्ष के साथ सुखद दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति संदेह, कुंठा और विषाद उत्पन्न कर देती है। परिणामतः घर की दीवारों का टूटना, जिन्हें बनाने का विवेक पति-पत्नी दोनों में नहीं रहता। दोनों अपने-अपने अहं और हठधर्मिता के चलते दाम्पत्य जीवन तबाह कर देते हैं।

'बिना दीवारों के घर' नाटक में अजित, शोभा, जयंत, जीजी, मीना, बंसी, श्री शुक्ला, श्रीमती शुक्ला, श्री चौधरी, श्रीमती चौधरी, श्री चावला, सेठ, डॉक्टर, नौकर और अप्पी आदि नौ पुरुष पात्रों और सात नारी पात्रों का जिक्र आता है। अप्पी का पात्र के रूप में नाटककार ने पात्र सूची में जिक्र नहीं किया, परंतु नाटक के कई प्रसंगों में उसका उल्लेख मिलता है। नाटक की नायिका शोभा मेहनती, विद्रोही, संघर्षशील, समानाधिकार के प्रति आग्रही, अत्याचार विरोधी, मानवता की समर्थक, निर्णय क्षमता रखने वाली, धनबल का महत्व जानने वाली, पति के ईर्ष्या, घुटन एवं अत्याचार की शिकार, पति परमेश्वर मानने का विरोध, अपने अस्तित्व के लिए दाम्पत्य जीवन दाँव पर लगाने वाली और पुरुषसत्ताक एकाधिकार को चुनौती देने वाली आत्मनिर्भर नारी है। अजित नाटक का प्रमुख पुरुष पात्र है, जो शिक्षा प्रेमी, हठधर्मी, ईर्ष्यालु, घमंडी, अकेलेपन का शिकार, झगड़ालू, समझौते अभाव, बिना दीवारों के घर का स्वामी, अविश्वासी पति की भूमिका में है। जीजी शोभा की ननद है, किंतु वह विधवा है। जीजी परिश्रमी, ज्ञानी, निस्वार्थी, ईमानदार, समर्पित, सेवाव्रती, बदकिस्मती एवं आधुनिक विचारों की नारी है। टूटते परिवार

Scanned by CamScanner

और बिखरते दाम्पत्य संबंधों को गलतफहमियाँ दूर करने की जी-जान से प्रयास करने वाली जीजी का चरित्र नाटक में त्यागी एवं संतुलित विचारों की नारी के रूप में उभरकर सामने आता है। नाटक में जयंत का चित्रण खलनायक के रूप में है। वह अपनी स्टेनो से नाजायज संबंध बनाता है, जिसके कारण उसके पारिवारिक संबंध टूट जाते है। उसकी पत्नी मीना घर छोड़कर चली जाती है। वह अकेला है, मगर शोभा के हर कार्य में प्रोत्साहन देता है। मीना नाटक की सहनायिका है, जो विद्रोही, साहसी, जागरुक, संवेदनशील, स्वाभिमानी और परित्यक्ता नारी का जीवनयापन करने वाली आत्मनिर्भर नारी है। इसके अलावा नाटक में अनेक गौण पात्र है, जो समय-समय पर नाटक को गति देते हैं।

कथोपकथन या संवाद नाटक का प्रमुख तत्व माना जाता है। संवादों के माध्यम से नाटक का सहज एवं स्वाभाविक विकास हो चुका है और पाठकों में कौतुहल एवं जिज्ञासा की निर्मिति हुई है। संवादों से पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ एवं मनस्थितियाँ उजागर हुईं है, विश्वसनीयता पैदा हुई है और कथानक के अनुकूल परिवेश निर्मिति हुई है। संवादों से दृश्य सजीव बने हुए हैं और नाटक के उद्दश्यों की पूर्ति भी सहज संभव हो चुकी है। उपयुक्त, स्वाभाविक, संक्षिप्त, उद्देश्यपूर्ण, सरल, अनुकूल, मनोवैज्ञानिक, भावात्मक, गतिशील, गंभीर, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, व्याख्यात्मक, भावात्मक, आवेगात्मक, प्रश्नार्थक, उपदेशात्मक, व्यावहारिक, व्यंग्यात्मक, हास्यप्रधान, मार्मिक, तर्कपूर्ण एवं अलंकारिक आदि मंचीय संवादों की योजना नाटक को सजीव बना देती है। प्रश्नार्थक संवादों के माध्यम से पात्रों की मानसिकता, सोच, विचार की अभिव्यक्ति हुई है। जैसे-

"जयंत : यह क्या, तुम रो रही हो?
शोभा : नहीं, यों ही जरा।
जयंत : बात क्या है?
जयंत : बात क्या है? अजित क्या ऑफिस से आ गया?"

(बिना दीवारों के घर - मन्नू भंडारी, पृष्ठ - 47)

'बिना दीवारों के घर' नाटक में पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, गंभीर, सांकेतिक, व्यंग्यात्मक, प्रभावी, प्रवाही, गतिशील, सरल, चुस्त आदि विशेषताओं से युक्त संवादों का सफल प्रयोग किया है। सफल संवादों के प्रयोग से नाटक का मंचन आसान हो चुका है। अधिकांश संवाद संक्षिप्त एवं अभिनयानुकूल है।

'बिना दीवारों के घर' नाटक में आंतरिक वातावरण घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण और बाह्य वातावरण के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक वातावरण का चित्रण हुआ है। नाटक के अनेक दृश्यों ड्रॉईंग रूम की

Scanned by CamScanner

रचना और वस्तुओं का वर्णन कर नाटककार ने अपनी रंगमंचीयता का परिचय दिया है। नाटक में चित्रित काल कुछ महीनों का है और घर की समस्याओं में विशेषकर नैतिक, मानसिक, स्थितियों को अभिव्यक्ता करता है। पति-पत्नी के आपसी संबंध, तनाव, टकराहट, गलतफहमियाँ, घुटन, कुंठा, बेबसी, अहं, घमंड को सशक्तता के साथ वातावरण का चित्रण किया है।

नाटक में उचित स्थान पर प्रकाश योजना है। जैसे- धीरे-धीरे रोशनी हल्की होना, बत्ती जलाना, लाइटर जलाना, सिगारेट जलाना, मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा छा जाना आदि। ध्वनि संगीत योजना के अंतर्गत फोन की आवाज, घंटी बजने की आवाज, तानपुरे का आलाप, हँसी की आवाज और आवाज का मंद पड़ जाना आदि ध्वनि-संगीत संकेत यथोचित स्थान पा चुके हैं।

'बिना दीवारों के घर' नाटक उद्देश्य की दृष्टि से सफल नाटक है। यह नाटक पाठकों का भरसक मनोरंजन करता हैं, जीवन की नई व्याख्या करता है। इसके अलावा यह नाटक पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाना, नारी शिक्षा, नारी जागरण, नारी का आर्थिक स्वावलंबन और उसका महत्व को स्पष्ट करता है। नारी की इज्जत, सम्मान, अस्मिता की रक्षा करने की विचारधारा को प्रोत्साहित करना, चेतना-संपन्न नारी के व्यक्तित्व और विद्रोह को अवगत कराना, निर्णय प्रक्रिया में नारी की भूमिका स्पष्ट करना, नौकरीपेशा नारी की मानसिकता को दिखाना, मातृत्व की नई अवधारणा को परिचित करना, नारी का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करना, दकियानूसी मानसिकता को उजागर करना, दाम्पत्य जीवन और पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक आदर्शों की स्थापना करना आदि उद्देश्यों की सफल सृष्टि यह नाटक करता है।

'बिना दीवारों के घर' नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से पर्याप्त क्षमता रखता है। सन् 1966 में प्रकाशित इस नाटक की दिल्ली, ग्वालियर की प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं। प्रथम मंचन रामगोपाल बजाज के निर्देशन में मिरांडा हाऊस की ओर से सन् 1979 में हुआ। द्वितीय मंच सन् 1981 ई. में बद्रीप्रसाद तिवारी के निर्देशन में संगीत कला मंदिर, कोलकाता द्वारा किया गया। पहले अंक में दो और दूसरे अंक में तीन तथा तीसरे अंक में तीन दृश्य हैं। प्रत्येक अंक के दृश्य में नाटककार ने रंगमंचीयता के लिए उपयोगी एवं आवश्यक निर्देशन दिए हुए है। रंग निर्देश और सूचनाएँ नाटक के मंचन के लिए उपयोगी प्रतीत होती है। नाटककार मन्नू भंडारी ने कथानक की बुनावट गतिशील, प्रभावी और रंगमंच के लिए उपयोगी हो इसका विशेष ध्यान रखा गया है। अभिनेयता की दृष्टि से नाटक में पात्रों की चरित्र सृष्टि का भी ध्यान रखा गया है। सभी पात्रों के मनोभावों के अंकन तथा

Scanned by CamScanner

पात्रों की बातचीत के लिए रंग निर्देश देकर नाटककार ने अपनी रंगमंचीय दृष्टि का परिचय दिया है। पात्रों के रंगमंच पर होने वाले प्रवेश एवं प्रस्थान, प्रकाश संबंधी निर्देशों को देकर नाटककार ने अपनी रंगमंचीय सूझ-बूझ का परिचय दिया है। मंचीय दृष्टि से पात्रों की संवाद प्रभावी है। नाटकीय भाषा एवं रंग तत्वों का अभाव रंगमंचीयता को प्रभावित किए बिना नहीं रहता। बावजूद इसके 'बिना दीवारों के घर' नाटक मंचन योग्य नाटक है क्योंकि मंचीय निर्देश नाटक के मंचन में सफलता लाते हैं।

प्रस्तुत नाटक की भाषा विषयवस्तु, पात्र, देशकाल वातावरण, प्रसंग के अनुकूल है। नाटक की भाषा सहज, सरल, स्पष्ट, सुबोध, पात्रनुकूल, प्रसंगानुकूल, अलंकारिक, प्रभावी, प्रवाही, मंचानुकूल है। नाटक में अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यांशों का प्रयोग हुआ है। आवश्यक स्थान पर शब्दालंकार, अर्थालंकार, मुहावरों और कहावतों का प्रयोग नाटक को प्रभावी बना देता है। नाटक में तत्सम, तत्भव, अरबी-फारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग नाटक को सहज बना देता है। नाटक में प्रयुक्त प्रतीकात्मक शैली, प्रश्नावाचक शैली, भावात्मक शैली, सांकेतिक शैली, आवेशात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, अलंकारिक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, खंडन-मंडन शैली, व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग नाटक को रोचक, सजीव, प्रभावी और गतिशील बना देता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'बिना दीवारों के घर' नाटक का शीर्षक प्रतिकार्थ है। घर का आधार दीवारें होती है। 'दीवारों के बिना घर' का टिकना संभव नहीं है। पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन घर है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक में जो घर है, उसकी दीवारे पिघल-सी गई हैं। घर परस्पर स्नेह, असंदेह, विश्वास, सामंजस्य, समझौता, सुरक्षा, त्याग, समर्पण, अपनेपन की दीवारों पर टिकता है। यदि परिवार की ये दीवारें टूट जाती है तो पति-पत्नी में परस्पर विश्वास नहीं रहता। वे एक-दूसरे पर संदेह करने लगते हैं। यही संदेह के बीज आपसी सामंजस्य नहीं रखतें बल्कि अपनी हठधर्मिता बनाए रखते हैं, जिससे दाम्पत्य जीवनरूपी घर की दीवारें टूट जाती हैं और घर बिना दीवारों का बन जाता है।

Scanned by CamScanner